VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

इंडोलोजी की दुनिया और उप्साला (स्वीडन): बदलता हुआ भारत, बदलता हुआ JAHON MIQYOSIDA HINDIY TILI

https://doi.org/10.5281/zenodo.7398146

हाइंस वरनर वेस्लर (उप्साला, स्वीडेन)
(Hindshunoslik olami va Shvetsiya)
Heinz Werner Wessler (Shvetsiya)
Tel: +46731025086

Annotatsiya: *Ushbu maqolada Shvesiyada hindi tilini o'rgatishni boshlanish tarixi, unga bo'lgan qiziqish sabablari va rivojlanib borayotgan Hindiston haqidagi mulohazalar bayon etilgan.*

Kalit so'zlar: *oliy o'quv yurtlari, qiziqish, yevropa, sanskrit, madaniyat, hindistonlik.*

एक तो यह है कि यूरोप के दर्जनों विश्वविद्यालयों में ऐसे संस्थान और विभाग हैं जहाँ इंडोलॉजी के नाम से भारतीय भाषाएं पढाई जाती हैं। पेरिस के कॉलेज दे फ्रांस में सन १८१४ में स्थापित किये गए प्राध्यापक पीठ के बाद १९. सदी के दौरान में यूरोप के विभिन्न राष्ट्रों में पूर्व से पश्चिम, और दक्षिण से उत्तर तक भाषा, साहित्य और सांस्कृतिक इतिहास का अध्ययन-अध्यापन आज तक चलता रहा।

ऐसा नहीं कि यहाँ के कुछ लोग अपनी ज़ुबान को छोड़कर संस्कृत या हिंदी या दूसरी कोई भाषा बोलने लगे और अपने बच्चों को पढ़ाने लगे। पर दूसरी तीसरी चौथी भाषा के रूप में कुछ लोगों की दिलचस्पी भारतीय भाषाओँ की तरह जाने लगी। और यहाँ की अकादमिक जीवन में इंडोलॉजी के लिए एक छोटी सी जगह बनी रही।

यानी भारतीय भाषाओँ और संस्कृतियों के अध्ययन-अध्यापन की परंपरा इधर अब दो सौ साल की है। पढाई भाषा और साहित्य पर आधारित है, और पहले से संस्कृत पहली जगह पर होती थी, पर फ्रांस के प्रसिद्ध हिंदुस्तानी के ज्ञानी Garcin de Tacy (१७९४-१८७८) के ज़माने से आधुनिक भाषाओँ और साहित्य पर भी कुछ हद तक ध्यान दिया गया था।

उप्साला में संस्कृत की पढ़ाई १८३८ में शुरू हुई। Otto Fredrik Tullberg (१८०२-१८५३) से मिटिक भाषाओं के प्रोफेसर रहे, पर १९ सदी के शुरुआती दशकों में संस्कृत साहित्य और भाषाशास्त्र का ज्ञान प्रचलित होने पर संस्कृत सीखने के लिए जर्मनी गए और वापस लौटकर खुद पढ़ने लगा।

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

१८९२/९३में उप्साला में एक प्राचार्य पीठ खोला गया। वहां से पूरी एक परंपरा आने लगी, इंडोलॉजी की, तुलनात्मक भाषाविज्ञान की और सांस्कृतिक इतिहास की। हमारे यहाँ उप्साला में भी William Smith (१९४२-२००९) के ज़माने से केंद्र बिंदु आधुनिक भाषाओं पर रहा। स्मिथ बंगाली के बड़े ज्ञानी थे और मध्यकालीन पूर्वी उत्तर भारत के साहित्य पर लिखते रहे। वैसे हिंदी १९६० के दशक से पढाई जाती है। जब से मैं यहां प्राचार्य बना, यानी २०१४ से, तब से हिंदी और संस्कृत दोनों में पूरा प्रोग्राम है, उर्दू प्रवेश की कक्षाएं भी हैं, दक्षिण एशिया का सांस्कृतिक इतिहास और आधुनिक भारत की कक्षाएं भी हैं। दूसरे अध्यापकों के साथ सामाजिक इतिहास और तुलनात्मक साहित्यशास्त्र भी पढ़ा रहा हूँ। खेद की बात है कि मेरे आलावा आधुनिक भाषाओं में और कोई स्थाई संयुक्ति नहीं है। वैसे अस्थाई तो थी और अभी भी हैं। यानी क्लासों की कमी नहीं है मेरे लिए।

आज़ादी के बाद और खासकर पिछले तीन दशकों में इधर के समाज और फैकल्टीज की तरफ से समकालीन भारत में दिलचस्पी बढ़ती रही और इस मामले में कुलपतियों की तरफ से और अकादमिक समितियों की तरफ से पढ़ाई आगे बढ़ाने की मांग पहले से ज़्यादा सशक्त होती रही।

भारत में जब भी मैं इधर के इस तरह के इस तरह की परंपरा पर बात कर रहा हूँ तो लोग चकित है – यहाँ तक कि विश्वास भी नहीं होता। पर मैं हमेशा कहता हूँ कि जिस तरह से लोग चीनी, रुसी, स्पेनिश या दूसरे किस्म की भाषाएं सीखते हैं, उसी तरह से संस्कृत, बंगाली, उर्दू या हिंदी क्यों नहीं सीखी जाएं?

इस के साथ हम हिंदी राजभाषा या राष्ट्रभाषा की तक़दीर तक पहुँच रहे हैं। पूरी दुनिया में लोग हिंदी सीखने के लिए क्यों नहीं आएं – जिस तरह से चीनी, जापानी, रुसी या दूसरी भाषाएं सीखने के लिए दौड़ते भागते हैं?

कुछ छात्र तो ज़रूर हैं और होते रहेंगे, पर पिछले कुछ साल से इनकी संख्या पूरे यूरोप में कम होती जा रही है। संस्कृत में भी पहले से बहुत कम छात्र आते हैं।जहाँ तक मेरी याद है जब मैं खुद बॉन विश्वविद्यालय (जर्मनी) में पढ़ता था तब हम ऐसे १२ छात्र संस्कृत में एक साल के बाद इम्तेहान लेने आए थे।उस वक़्त से अब तीस साल से ज़्यादा गुज़ारे हैं। उसी बोन विश्वविद्यालय में आज कल संस्कृत के प्रथम वर्ष के छात्र मुश्किल से२-३ ही होंगे। इधर उप्साला में हाल यही है।

हिंदी में जब से ऑनलाइन पढाई जाती है तब से छात्रों की संख्या पहले साल में २०-२५ हैं। कोरोना संकट से पहले ऑनलाइन में अध्यापन शुरू हुआ था, पर २०२० से ज़बरदस्ती से चल रही है। मैं मानता हूँ कि हमारा भविष्य ऑनलाइन कक्षाओं के साथ ही बन रहा है।

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

मुझ को लगता है कि एक तरफ से हिंदुस्तान पिछले तीस साल में बहुत कुछ हद तक ज़्यादा नज़दीक आने लगा। इंटरनेट पर बहुत सारी और रंगीली तस्वीरें सामने आती हैं। पर्यटकों की संख्या हर साल में बढ़ती जा रही है। बड़े बूढ़े और नौजवान – हर किस्म और हर उम्र के लोग छुट्टियों में हिंदुस्तान जाते हैं। हमारा युगभूमंडलीकरण का कहा जाता है। भारत अब दूर नहीं रहा। छुट्टियां मनाने के लिए सब मिलाकर भारत में लोकप्रिय जगहों की कमी नहीं हैं। और यहाँ की आबादी यात्रा करना, दूसरे किस्म का खाना खाना और दूसरे किस्म के लोगों से मिलना पसंद करती है। कोरोना संकट के बाद अब पहली की तरह चक्कर लगाने का सिलसिला अब दुबारह शुरू हुआ है।

यह तो बहुत अच्छा है कि लोग खुद घूमने के लिए और सब कुछ देखने के लिए आते हैं पर सवाल यह है कि क्या मामूली पर्यटक अपनी यात्रा से वापस लौट कर ज़्यादा जागरूक बना है या नहीं। क्या यात्री भारत से वापस आकर अपनी यात्रा के उद्देश्य में ज़्यादा ज्ञान प्राप्त करने के लिए दिलचस्पी रखते हैं? कुछ तो ज़रूर रखते होंगे। पर दिलचस्पी ऐसी नहीं है कि बड़ी संख्या में हिंदी पढ़ने के लिए दौड़ते हैं।

पर एक बात तो सही है। लगभग हर छोटे मोठे शहर में पूरे यूरोप में आज कल हिंदुस्तानी खाना आसानी से मिल जाता है, योग की क्ला सेज होती हैं, बॉलीवुड फ़िल्में दिखती हैं। और नयी पीढ़ी में होली के नाम से साल में कई बार रंग खेलने की आदत बनती हैं। हालाँकि कहना तो है कि होलीका त्यौहार और पश्चिमी होली का यह सिलसिला काफ़ी अलग हैं। एक तरह से कहा जा सकता है कि इधर के नौजवान पूरी दुनिया की परम्पराओं से जो पसंद है वह एक तरह से अपना लेते हैं और इसको लेकर अपनी खिचड़ी पकाते हैं। पर खैर, हो सकता है कि मैं बस इसी उम्र में पहुँच रहा हूँ जिस में इंसान नयी पीढ़ी की शिकायत करना पसंद करता है।

एक बात तो निश्चित रूप से कह सकता हूँ। हिंदी के छात्रों की संख्या कम है, पर जो छात्र आते हैं, वे मेहनत ज़रूर करते हैं, दिलचस्पी लेते हैं और दो तीन साल में अच्छी हिंदी सीख लेते हैं। कहानियां-उपन्यास पढ़ते हैं, दिन-दिन इंटरनेट (अंतर्जाल) में हिंदुस्तान की खबरें खोलते रहते हैं, फ़िल्में देखते हैं और चाहे या न चाहे एक तरह से इधर के समाज में हर एक अपनी ही जगह पर चाहे या न चाहे भारत के राजदूत बनते हैं। हमारे यहाँ स्वीडन में भी ऐसा तब का बना है जिस की ज़िन्दगी और पहचान हिंदुस्तान से जुडी है और जुडी रहेगी।

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7